

मानवतन्त्रवदानसूक्तिलथकूल॥

आम्हा भक्तवार्थ

216

1871 H/ES

मणिचूदावदान



मणिचूड राजा कोवदान
मणिचूड राजा को जीवने चलेन
प्रचलितने पाली भाषा लेखी
एवम् गीषा

१३३ नमो ४ वृद्धाय ॥ ॥ नवमया धर्ममकस्मिं समय रगवान् अवस्थां विदुः निसमा ॥ रगवन ३ नाथयिषु यस्या नाम यदाः
रगवता यागिहार्यविदभिर्निरुत्तमासीत्थानिदिमा दवमन्यास्मापिगानिसकूनदद्यानि । तदारिद्र्यवशाभ्यर्थे जाना
प्रदुग्धाना रगवकमिदमवाच ॥ आश्चर्यं रुदकयद् रगवता ॥ दीमदं मदायागिहार्यविदभिर्निरुत्तमासीत्थानिदिमा
दवमन्यास्मापिगानिसकूनदद्यानीमि ॥ रगवानाह ॥ नवमहि कवममतायथायित्थयति यत्तु कनत्वात्वाविर्मलावस्यतथाः
हिरिकवादीयैरागं तथा गगनगिरिकल्यासंख्येयैश्च दूषयन्नसहसे बोधिसंरावश्यवियविनशा अयिषु निष्ठुरुनांदवन्

कल्यायन्मया ॥ स्मिन्नवरुदकल्यावाधिसंरावययियन्नार्थसहदूषयं कर्मकृता गच्छयतां रगयर्विरुद्धा ॥ स्मिन्नवरुदकल्या
साकमनगववृद्धदलानामवाजानाश्चकारयंमि ॥ अद्वं वस्तीर्नं वदुमं वसुरि कुंता कीर्तुवद्जनमन्या वयं ॥ न कलिक लद
गुम्बुमवतस्तुवया ज्ञायगमं ॥ लीङ्ग (गमहिषीसंयन्मरिवमकधु कम कयूयमिवरास्यंकारयमि ॥ तस्याचारु ४ काक्रममि
नामदद्याग्रमाहिषीवत् ॥ अरिवपादभोनीयायासादिका अत्यथीमद्वृताकाकावगीप्रियावमन आयाव ॥ सा १ यव १ समः
यावदयासाद्वं कीर्तुनवमगयिवायनि तस्य कीर्तनावममा १ स्ययिवायन ४ कासनसमयनदयायन सत्यासंरुहाः

स्यायमवपुषा दाहदउत्यन्नः॥ अहो वनाहं महानिदिवत्सुवर्णः॥ (ॐ) निषद्य नन्वर्धदिवत्सुवर्णः॥ मन्त्रवाक्
अहो वपुषा दाहदउत्यन्नः॥ अहो वनाहं महानिदिवत्सुवर्णः॥ (ॐ) निषद्य नन्वर्धदिवत्सुवर्णः॥ मन्त्रवाक्
सुखी इत्यायमनूराः॥ गंगा नाला प्रमृदिन दहय न ग (थे) का विनं॥ गस्या या दाहदउत्यन्नः॥ सपु निविग न यून वयि नः
स्या दाहदउत्यन्नः॥ अहो वनाहं महानिदिवत्सुवर्णः॥ मन्त्रवाक् (ॐ) निषद्य नन्वर्धदिवत्सुवर्णः॥ मन्त्रवाक्
गस्या या दाहदउत्यन्नः॥ सपु निविग न यून वयि न स्या दाहदउत्यन्नः॥ अहो वनाहं महानिदिवत्सुवर्णः॥ मन्त्रवाक्

२

अधर्मो दहयामि गंगा नाला प्रमृदिन दहय न ग (थे) का विनं॥ गस्या या दाहदउत्यन्नः॥ सपु निविग न यून वयि नः
महानूरा वा इत्यायमनूराः॥ गंगा नाला प्रमृदिन दहय न ग (थे) का विनं॥ गस्या या दाहदउत्यन्नः॥ सपु निविग न यून वयि नः
अवधाय नाका विना॥ गंगा नाला प्रमृदिन दहय न ग (थे) का विनं॥ गस्या या दाहदउत्यन्नः॥ सपु निविग न यून वयि नः
यानि॥ यथा धर्मो कात्तु सना ऊकल मा गत्या विग न संका धर्मो गंगा नाला प्रमृदिन दहय न ग (थे) का विनं॥ गस्या या दाहदउत्यन्नः॥ सपु निविग न यून वयि नः

जनकायसन्निषेधसन्निपतिनकात्मिमनिदवी ससर्वपदमवलोक्यमृदितद्वयामूर्तुलंरुहीमवसिन्ता॥नन
स्यावाधिसत्यनन्तावनाग्रयूवेमिमागमथयतिराविताधर्मसिन्तायातिगुलेविद्विंयाप्रातिगुष्टिंयमांसमध्याया
केचदुश्खनविषादमनियवगवाप्रानिसुखीवधमलं॥मोहिनेवकविचक्राधर्मयूकपितायथपूजमूदावचलं।नस्मा
द्वध्वाहानवलाययनायावधियंधर्ममनःयकूर्याग॥धर्माहिनेवकविधर्मयूकंकुरयथावर्षतिवर्षकालाधर्मानुहीसास
गगनसस्मानदूर्गनिंगकृतिधर्मवात्री॥अधर्मवात्रीतुनप्रयमलायांगनिंगकृतिमृदुदृष्टि॥निदुलधर्मश्चित

३

सप्तवंवक्षायथकुरुंगशृहीग॥नकधर्मध्वधर्मवडलोसमविद्याकिनो॥अधर्मान्नवकंयानिधर्मोन्यथागिसकृमिति
॥अथमःयवदःकानिमस्यादद्यासकाधर्मध्वत्वापसादजागधर्मववाय॥४४संयत्ता॥ननसुस्यादद्यादादुदउ
त्यन्न॥स्यनिविगनयूनवयिनस्यादादुदउत्यन्न॥अदावगाहमद्यानानियधममिति।नयावाहृआयाविता॥
नतावाहृमहमीनगव॥४४रामार्ग॥४४रामकावयित्याउद्यानानिचार्यलंकृत्यमाहगायविवाय॥यविचमाउद्याना
निदमितानिमस्यायादादुदउत्यन्न॥स्यनिविगनयूनवयिनस्यादादुदउत्यन्न॥अदावगाहंरुनानांसत्यानामूय

गीतगीतं वा सुसंख्य (४) भक्ति कं सर्वथा धिषो वा दका गिद्रि र्ज्ञाय सगम धां यः समनं प दान्ता दकन स सर्वविधा सिद्धि
ना सयति। तस्माच्च मनोवत्ता दद्यात् उद कविन्दव ४ कवनिने सो दसं ल्य ४ (४) एनं काश्च नं रगवै नि। जातमाय ४ क
माल ४ कथयति। एवकाय दन्त लि वत्ता ल्य कवनि गना दक न ला दस्य ला वं स्य (४) ग (४) न (४) एनं काश्च नं रवि यति ५
तस्य कां वनं सर्वं म ल वा क्र ४ कृ प ४ व नी य क थो न य य कृ म नि न ग क न वा ह नि व दि मं। वा हा क र ह ल जा म न न
(थे व का वि मं। र्य व द भो ला द स्य ला व ल्मि न्न व क (४) य वि लु द्ध स्य कां वनं नै स्य वा गि ४ व क नं का य मा ना २ व सि म ४ न

आध्वयं दृष्ट्वा वा जा सर्वं ध्व जन काय ४ य वं वि स्म य मू य ग ग ४॥ सर्वं च त स्म व लं म न वा क्र न य न ल व ली व क थो द रु वा
न। य द वा सा क मा वा जा ग रु द द व ना रि दि र्य ध ज य ना का स म न क उ द्दि ना दि या नि व वा द्या नि व वा ह र्या नि दि द्या प
प्र क म लु य लु वी क मा न्दा व वा नी य थो लि कि द्या नि स प व ल व र्ष या नि मं॥ उ य र्य न क वा स्य द व ना दि र्य कृ णं व ल द लु
स म नि ना ल वां ज नं ध व य नि॥ सर्वं सा क न ग व य म सा आ य वि नं। तस्य जा मो ज ति म दं क थो ना म (ध यं य व ल्म य न
किं रु र व लु दा व स्य ना म ति॥ अ मा र्या ४ क थ र्य नि द व य स्मा द यं क मा व ४ मि व सि म रु मा म लि व ल न ग ल ल न जा न ४:

[illegible][illegible]

दयनयनि लीलासर्वाङ्ग ॥ पूर्वी भां वागुदवील्लापिता सुनया सा र्द्धं कीर्तिनमनं पवित्रायति ॥ गङ्गा कीर्तना व म सा ॥
सायनि वा वय न ॥ पत्नीपद्मा वनी आप न सत्वा संवत्सा ॥ सा न वानां मा सा ना म स्य या स्य सुनाय पाजा मा ॥ इति रूपा दर्भनीय ॥
या सा दिक ॥ यथा रुद्र ॥ निता ल्य ना म ध्ययं च व ल्हा यितं स उन्नी ता व दि मा म हान् सं व ह ॥ यौ व ना क्त व यो न स्त्रा पि न ॥ या
व द प्र व ल स म य न को म र्द्यां पू र्ण मा स्यां वा धि स त् ॥ सा न्त् पू र कू मा ना मा ल्य यो व ज्ञा न य द ॥ अ स्त्रां ग म् प वा स म् थ्या य क
नू र्वा स र्वा दि न द द य ॥ स त्वा नो य नि वा न ना थ सा क न न ग य य ॥ अ व धा य भां का व य्या मा सा स र्द्धं कुरु र य न ॥ सा क न न ग य

४

नियामि ना द व न वं सा मा ह्या य ति ॥ व दि न ग न स्या म लु त वा ली घं सं निय मि त य मि त्थ स रू न का या वा ह्या य ॥ अ व धा
य भां धृ त्वा ल्य नि र्ग म लु त वा टं ग न ॥ अ थ स वा धि स त्वा म हा ज न का र्थं स नि य मि तं वि दि त्या म ह त्या वा ऊ र्ध्वा ना ज न रा व
न य न म लु त वा ट रु ना प रं का रु ड य सं क म्प म ह ति सिं हा स न नि य य नं ऊ न का य मि द म वा व न ॥ अ न य र्ग र वं ना मा र ह्नी
र व म पि र ह्नी ॥ अ म ल्वा क्त ॥ अ र्ति र्वा य का रु द्वा ॥ अ य क्ता क य व लो क ॥ अ य क्ता क य व लो क ॥ अ य क्ता क य व लो क ॥
दाना नि द द ग प्थ नि क रू उ य वा स म य व स न जी लं स मा दा य व र्द्धं ॥ ग ल्क ल्य ह मा दो नो दि र व न्त् र वं ना द त्वा अ श्वा र व नि

महर्षिनामहाशिरः ४५ रुद्रसत्त्वध्वजः ४५ रुद्रगदितं ४५ रुद्रमहिमूकादिद्युतत्वा संनिवय ४५ रुद्रजडासीदासकर्मक
वयोवृषय ४५ रुद्रमणिगामात्य ह्यति सात्त्वत्वादिह ४५ लीलेयु नवा संविजं वद्ध ॥ लो रुद्रगवाधनं न स्वर्गमय पुरुष संवर्द्धना ॥
मर्त्यस्थितयः सदा ननवभीलनवसुगमो मनूष्य इरुगमनां स रुद्रगतायामृत्युयता ॥ लो रुद्रगसंयन्त्ररुद्रा विमिश्र नदाः ५
ननभीलनमनूष्य इरुगमनां स रुद्रगतायामृत्युयता स रुद्रगयन्त्ररुद्रा विमिश्र नवा पुर्महा बाजिका नांदयानां स रुद्रगतायामृत्युयता ॥
मृत्युयता ॥ रुद्रा विमिश्र नवा स रुद्रगतायामृत्युयता स रुद्रगयन्त्ररुद्रा विमिश्र नवा पुर्महा बाजिका नांदयानां स रुद्रगतायामृत्युयता ॥

[illegible]

शक्यो ब्रूयमिहा माया सा सा हि गंयय सत्त्वा हय रया धरुवा ४ य यया लभय ना लध न जी वि का क ल यं मि पू ध्या निः
चक्र विष्णु मिति ॥ तस्मात् कर्म ल ४ य मिति व सं भुं रं मनु ॥ अरुं गं या व दा कं ध न म नू प य क्ता मि थ न जि वि कां क ल यि
या कि दा ना नि व दा स्य कि पू ध्या नि च क वि ष्य कि ति ॥ अथ वा धि स ल क्त्वां व ला यां ग म थ अ लु व न ॥ दा ना ठि सा र दा ला
क र ग वा नू वी म ल्त्वा य भ स्त्री रु व गि धो मा नू स ग मो र्वा प द्य न दी र्घा य व ल वा नू लो नी व र्त्वा नू द म न ४ ॥ पि या रु व कि
लो का ना भो य जी य ध्य जा य न ॥ सा रो रु व गि दि द्या नां मा नू ध्या ल्मं न ल ये व न ॥ ब्रू य हा दे व स स्य भ ग न्ध ना म प य ल्ने न ४ ॥

अनाकृष्टधनोऽथ सुखी नित्यं पुजायत। पण्डिताननसंपन्नानित्यांगपराय न क्षयः स ४० वां (अथेव नित्यं सहिष्य सव्यम
॥ विप्रसन्नमुखो मत्स्यार्थं दनं सखमिदम् ॥ विष्णुसान्नं दद्यात्तानां यमाद्यङ्गना रुक्मिणी साधकः ४१ स्वर्गमागम्य तस्मान्नन्दवहूत
सदा प्रिया दवमनसा त्वं वसुगतीनां वयं वरकः ॥ सा खीरवमिदीर्घायुः ४२ स्त्री ववी सा वदः ४३ वरुणी प्रदत्ता द्धनं मनूयाम
दत्तिता ४४ प्रीतिप्राप्ता द्यजातः ४५ नित्यं स्वर्गपराय ४६ ॥ न समाद्यानं सदा दयं रागसिंकातिमिदम् ४७ स विनयं नथ अलं
स्वर्गमिच्छति ॥ न नावाधिसत्त्वसंजनकाय न्धमाया कथया संदधसं मोदाय समरुद्धसंयुद्धात्प्राप्तनात्यक्रान्तः ४८

अथ वत्या गोला कपाला सुख विनया वा वक्तिमि संला कं प्रत्यव क्रमा ६५ अथ पूर्व वसा कं नग वसन प्राप्ता यावन्नग
 श्याव विष्णु नक्षत्रं गुरुं न संल क्रय नि ॥ का हनुक ४ प्रत्यथा नासा कं गतिर्या हना न धसा द्य वला कथि शुमाल
 प्रा ४॥ या वत्यु धं नि वा धि सत्य स्थान गा वन नम रूप वं विस्मय मा गमा न न वं य नि नि वत्य थ न द वा सु य सिं सा सु ना प
 सं काना डय संक्रम्य दवानां द्रय सिं धनां स दायं डा धा सु र धर्मा यां द व स या यां स निष ६५ ना सं निपति ता नाम न सः
 थ विस्मय धा वा व या मा स ४॥ ६५ अथ यं माषा ६५ ह व यं व त्या या ला कपाला ४ सर्व मि संला क म त्या दि न्या नू पूर्व व सा कं न स्य

११

नग वस्था पविष्ठा लं प्रसिद्धा ४ नक्षत्रा गुरु ग व यं प्रत्य व क्रमा ना ४ य ६५ भा म सि वृं ना म वा जानं सान् ४ पूर्व क्रमा याः
 मा लु रु ट व ला ग्र ने ग म ज न प द म ल्य थ दान मी ल न वं स्व र्ग मि ६५ ध य क्र मि ति हि मा र्था दि या का या प्र रि व द्र यि थ न्क आ स
 वा का या ४ प वि द्वा ल्य नि मि ॥ अथ वत्या ४ का द वा ना मि द्वा ला क पा ला नां व व नं ६५ ला षी मि प्रा मा घ जा न स त्या व त्या या ४ ग म थ
 हा व नं ॥ दानं द दा ल्य यं ना जा स त्या ४ रु पा या नि व ४ ॥ दान मे व स दा स त्या न स नि या ऊ य नि प्र ४ का य न सं व गा धी मा न च व सा
 म न सा म थ ॥ ध र्मा त्मा मी ल सं य न ४ स त्या वा दि डि क दि या ४ का न् धं य व सं क्र त्या स त्या न मी ल वि धो ६५ प नि स्र य य मि ति

पुंस्त्वगमाक यवायत्ता ॥ अन्नन कूजल नायं कर्म क्षा कर्तव्यत्त क ॥ कतम दूव वाचं वे आ कर्षति स होति । अथ नस्ति न्नं न यस्यां दव
यर्षदि उदा वा ॥ वला रुस ॥ यादू र्त्ता ॥ यं दृष्टा वक्रा द वा ना मि न्द्रा द वां सु य मिं ॥ अथ व रु व ध्व म हा वा जा ला क या ला य स स्ति न या
म कृ य न मा नो य यं मा र्ब उल्हा या स न स्था मा त्रि का म क या व न्द्रा स्था म ॥ किं वि का रा य म् दा वा व ला सा र वि धा नि कि म न
सं ॥ ॥ अथ न स्था य र्दि न हा वा क्रा स द से व या ॥ र्त्ता ॥ अथ व द्वा स हा व नि ॥ अ कं द या ना मि न्द्रा मा म न्न य न स्था ॥ को णि
क किं न ॥ अथ मि म ति वृ णं ग हा नं क र्त्ता किं स र्वे स स्था ना म र्थ वा धि य थ मा न्द्रं वा धि सु र्वा व प रि दू र्वा या लू द नं क र्त्ता किं

यथाशिवस्य साहाय्य कल्याणितया मिल्युक्ता वक्रासहायनिसुतो वा न हि न शतं कृष्णकादवन्तं उपरं विस्मयमयं गतं ४ यामि
यामाद्यजामाविद वमिस्मा ॥ यथाधिसत्त्वसु स्याभव वा शानिकया मासा यत्तु हं वरुति मषि मृदि ४ यमहा जहय ऊमिति ॥
यथाधिसत्त्व ४ यथावायां वज्रानां वाक्का धर्मो दितां वक्रवर्थं नाम क्षीति स्यात्तु गं दं गं नाहय कथयति य इव नृपाश्च यजानीयाः
कामहोनि गैवे शुं मदा ऊहं य इमिति सुकथयति दवत्स रूतमवक्रियतामिति ॥ तमा वा ह्ला स्नात्या नामा ह्लाद ह्ला ॥ रुवन्का ॥
होने वगुं मदा ऊहं य इमिति सुमि ॥ यद्युष्मारि मम य ह्यर्थं सेवाय कवत्तानि समुदा ननया मिति ॥ ॥ ॥ वंदवत्स मात्या वाधि

सत्त्वायपुनिष्ठस्यसर्वोपकवत्तानिसमूदानेनुमावप्रा॥अथतस्मिन्वदिवस्यंवाक्रत्वाधिसत्त्वमयसंकम्ययाविशुंयवः
 हा॥मवांसका॥इवविदक्षितेदृष्टिगापदयाद्विडक्ष्महंतदहसिमधनंदाउंयनाहंमस्याइकाहंक्रयोमिति॥दिगीयडः
 वावादेवंकपत्त॥इहंयाधिता॥नाथह्वनदहसिमधोवधमूल्यंधनंदाउमिति॥हमीया॥इवपीतुदवयूकुदारंमधनिकेवूः
 यवृद्धंतिरितिगदहासिगद्धननमलमाययिउमितिबहुथ॥कथयमिममयासुदधर्मवात्रीलीयोवेवदतागदहसिममस्या
 ४यधिमामनार्थधनंयेदाउमिति॥येवम४कयमिदवाहंमस्मिजी॥धुवृद्धा॥महत्त्वक४ययय॥यययदहसिममजीवीका

१३

र्थधदाउमिति॥अथवाधिसत्त्वमेवाक्रत्वेयंवंकवत्तदावविशंविगेवक्रवेवचमान॥कावत्त॥इकस्त्रिगवाथायवृद्धमाः
 नगददक॥इहंययोक्तुक्त॥वादिगुयवृत्त॥मगह्ववाक्रत्वाधिसत्त्वमय४कस्मात्वंदवास्माशिर्या
 विगायादिविगि॥वाधिसत्त्व४यादसहावाक्रत्वा॥इहंमन्दरात्मनिह्वानिकावृत्तिक४कयत्त॥इवाहदव्ययः
 नायियावनकाअविशकारुवंतिसरुया॥व्ययथायवृद्धमावावयक॥॥नमर्थमहंवादिमि॥अयिमममवत्त॥दावतः
 मयावनकाविध्वक्ता४समायना४स्वगहादिवधनजातंगृहित्वागकयमिति॥तनस्ववाक्रत्वाधिसत्त्वस्यदम्यंयववनं

२०

ॐ स्वायम्भुविसमयमयगता ॥ वाधिसत्त्वनायिका वृक्षान्यार्थनाधिकनधननसंगर्थविसर्जिता ॥ गता ॥ १५ ॥
 गनसार्द्धं भक्तियुविद्वन्विधिनायवधनगवस्यमहायज्ञायकवक्षानिसमूदा नीयायुक्तं वखादनियंशुनीयं दाना
 र्थं तथा प्ररुगंधनधनान्द्रिधसर्ववृहस्पत्यवथयानभयनासनवस्त्रालंकायादिकंसमूनीयवाधिसत्त्वमयसंकम्येवम्
 यथायत्नवत्तुदवजानीया ॥ सर्वोभियज्ञायकवक्षानिसमूदा नीयानियुक्तं वखादनियंशुनीयं दाना
 र्थं वृहस्पत्यवथयानासनवस्त्रालंकायादिकंसमूदा नीयान् ॥ नानातीर्थिकक्षमधवाक्कधवाक्कधवाक्क ॥ १६ ॥

१४

हाऊह्यत्यनूरविर्गुं वरुवादीनानाकृपधवनीयकाविरुवार्थसमागता ॥ कूनवाऊ ॥ १७ ॥
 गकावहवाहिरुगतामृत्युधमहाऊनकायंसंनियतिग ॥ कालः ॥ दानींदवसायहवाटंगकुमित्यर्थवाधिसत्त्व ॥ कवृक्ष
 यासंवाद्यमानद्वदय ॥ सांकद ॥ १८ ॥
 मारुवकादध ॥ कृमलांकर्मयथान्यऊहीगामत्कस्य दगावहिरुवक ॥ १९ ॥
 दूर्गतिविनियानंनवकषयद्रु ॥ २० ॥

दशकृष्णलोकमेव धर्मादायवर्धमिति। अथिमागन्तव्यं कृष्णल ४ कर्मयत्थे वा सविने लोविने वृहली कर्मे ४ सर्वे ३ ४
 त्वकृत्योनिर्वाहमनूपायै किं अथममहाजनकाय ४ मांसवप्यांधर्मदहनो ४ लासंसायाद्विद्वानिर्वाहगुहदहीसय
 ४ ॥ अथवाधिसत्त्वसुत्या ४ यवद्वं सनृगियविद्याननं कृत्वापून ४ कथयति ॥ अहं सारु वना निगठं सदायहयसूभिः
 कामियद्यथाशिममयहस्यसहस्रगांकु कामेवनृकंपायव ४ सवयमनास्सत्त्वमांदकिं भां प्रगृहीतुमनूयह ४ का
 यः ४ त्यक्त्वा वाधिसत्त्व ४ यथावत्यादयासाहं यदी जायविष्मनिर्गवेठं मदा ४ हं मना वनदा वयं यक्षमावद्ध ४ ॥ नवकस्मिं स

१५

ह

हायह्यानीद्यात्त ॥ दासीदामकर्म करयो वयमाहमस्तु सविना गृह्यवि कर्म कर्माति सर्वे त्यक्त्वा समागमत्यायथा
 हितविमानिदानानिदियकनकश्चिदयविप्रधुमनात्र ॥ अगच्छति गवमहाजनकायं गच्छन्मनूगच्छन्कं यद्व्याधाधिसत्त्व ४
 यागियाभाद्यजाग ४ संलकृत्यनितदलामलागमयं महाजनकायस्सहस्रमवाक्षेय्याधियस्यं सहस्रजां विनमिं प्रथविः
 क्षान्तिमदिवशसंयाकमर्यस्या ४ यद्रमनकालसंयं मय ४ कादवत्यावाधिसत्त्वस्यमीमासनार्थ ॥ आहमि वरिवर्हिनाम
 हतायहाग्निस्फुटदीपध्या ॥ सदसेवमग्निस्त्वन्ध्यामसा मरिसन्यं प्रकलिनङ्गाकलापं तादिकं विकृतकवचवच

यनं कला लवदनं घात्रविदात्रितमूर्खं विनिर्गतजिह्वं बोधावाक्यसमश्लिष्टमिमांसादाशेव वसदृष्टदासमूर्तिः ॥ अथ
समहाजनकार्यसंग्रहं गथाख्यानकंदंष्ट्रासंग्रहसमनादिद्वयं ॥ तन्मात्राकसंस्कृतपूठकवृक्षदीनविलम्बितेव
येवाविसस्त्वमूवाच ॥ महाबाहुर्लक्ष्मिर्वपदंष्ट्रयागं ॥ साकं तमहानगवमहानगनाय स्वासहं यावयस्मिं वदन्निक्षिप्तं
लियासाधुना ॥ ४ ॥ खीणस्याहवर्का क्रिया ॥ अत्रावाहमाहवर्दं ॥ ४ ॥ खां विद्यामिधदना ॥ अथ ४ ॥ यत्र तास्यैवमिति ॥ ४ ॥
न ४ ॥ विवत्राभिमतद्विहृत्स्नादीनां रमयवाक्यम ॥ ४ ॥ वद्ववर्षाख्यवायिहृत्स्नासाक्षिणीति ४ ॥ सदमप्यनपानस्यन
रकात्

यत्प्रमाणेति
सुखदर्शनं कृद्वा ॥ तथा यस्मिन् महास्य गन्तव्यं मां का नृत्ति कथय ॥ श्रीधरमाहायणानननीयदृष्ट्वा रिताठिकमिति ॥ अथः
वाधिसन्ता वा कृत्या निकादिदमवन्त्यं वा कृत्यादा वंष्ट्वा कृत्या विस्तरदय ४ नं वा कृत्यामा ४ सय नृवावमा रेपी नृहमि
दानात्वा यथा रिताठिकनाहायस्य वदकं सतर्पयामि त्यक्त्वा येन येनाना मंगयन ॥ श्रीधर वन्तासेना कृत्यायथा रि
लघिमं स्वादनियं यावदाकमन्युयकृत्तमि ॥ तथा ४ यो नृयथे वाधिसन्तस्य यमिष्ट ॥ त्यस्य विगं कृत्या पूरकान्त्वा दनी
यत्ताडनीयत्ताडनीयस्य महास्य सिद्धिस्तु यि न ४ ॥ तथा वा कृत्या ४ कथयति महास्य ताडनादसर्वं विधमाहायणमाहायमि कि

दुसधादकमांसवृधिवरुका ६ हंनघदिकावृधिका रुवा नृदयमिहस्यवादिब न क ४ धीघं वृलुकिनापि पा नं च मांसाप
 रिमो न्नवृधिवेसं गय यथा रि त्वयाममायमा हाव न्धयमिहामान त्वा द्विधो वृधिका मदात्मना मृषा वा वं शाष कः ॥ १० ॥
 क वाधिसुतः ४ का वृध्यादा क मि ग द्दय ४ सं के ले ति ॥ हा क र्ते य व म सं क ठ म ह मि दा नी य वि द्ध ४ क थ म न म या य नि य रु
 यं प ल्य ग्र ष मां मां नां स वृ धि वा न्ध वि धा या नि व ध न ना स्मि सं रु वा ॥ स्य वा य म हा व ४ य मि ह्मा मान वा दं क न पि यी लिः
 का ना म पि या नि ना य दान यि उ म् त्सा ह सर्व था दान या न मि ना या प वि पू व सार्थ सा नि मां सा वृ धि वा न्ध स्मे वा क सा य

दास्यामीति ॥ अथ वा क स व धा वी ष का द वे नृ ४ क थ य ति हं रु या र्थि व किं वि का प व हि ह्मि श्मी व रु धि ना ६ हं नृ ले विः
 ल म्ब न कि वा धि स त्व ड वा व व त्सा न व या दृ षं हा ला न हि ष क न वि ना य व हिं स या स या द यि उ म् हं व पा नि व धा न्य मि वि व ना
 न व क ष्चि नि व म न वि वा षा ग न यू वे ४ ॥ क स्मा द हं रु धा वी वा दा त्मां दा य मां स वृ धि वा नि य ल्य ग्र षि दा स्या मी ति ॥ मू र्ध्ना कि नि
 न वा न ॥ वा क स ४ पा द ॥ म हा वा क रु धा ने न त्वं म या या वि ना य ह्दी नि ना ना रु त्वा व न्ध न नि र्ग म हा य ह्वा रु ना ॥ त्व या व म म
 य मि ह्मा नं य था रि ल वि क मा हा वं दा स्या मी ति त्कि म न या वि क या य दि त्वं स ल्य य नि रु शा य थ वा न थ वा य मा म स द ह न मां स

वृधिवानिभीर्घृण्ययच्छयावच्छादयिष्यति ॥ कथा कालं न कथामाति ॥ एवं मूक वाधिसत्त्वावाधो मनः ॥ ४ ॥ निधाय श्रुतिवाद्वाभाभयूतिः
 काया इयमनूहनाया ॥ ४ ॥ सम्यक् कथा ॥ ४ ॥ संलावला वंगमिषा नीत्यनूवि विच्छिन्नमिं वाक्यसंश्लेषकत्रुत्तं वाच्या दधेयवलमुदितां
 तं वाक्यसं समाश्रय नवावा ॥ ४ ॥ ऐषीवत्तानिना संकटस्कासा संय ॥ ४ ॥ थिष्टमं यत्तयै वापि वृधिममत्वं यिवल्यदिनः ॥ ४ ॥ अथ त्वान्वयः
 यिष्यामि सर्वदं मां स ॥ ४ ॥ निरु ॥ ४ ॥ अथ य पूर्वमविवात्सं द्रुक्षु रवपूर्वकः ॥ ४ ॥ अथ त्वया सुमिषु स संयुक्तः ॥ ४ ॥ अथिवा द हं यानया प्रयया
 स्यामि सर्ववृद्धनिषयिनां ॥ ४ ॥ अथ हं युगिका दस्मादिना ॥ ४ ॥ कात्क उववा न रवत्तं मिश्रमासा दसा न मूर्द्धं मूर्द्धं ॥ ४ ॥ अथ नि

१४

वृद्धदहं त्वं स्वमां स वृधिये वदं उवावहि ॥ ४ ॥ कविष्यामि सवहू हानकां क्रया ॥ ४ ॥ अथ मां सा मिदात्या मिच्छित्वां छित्वा स्वदहन
 ॥ ४ ॥ अथिवाद्वा न ग रवत्तं वत्तिगनकव ॥ ४ ॥ अथ यस्या तुमद्वक्षदवगन्धर्वदानवा ॥ ४ ॥ सत्त्वाथ निधनं शान्कवा धिषव ववः
 कस ॥ ४ ॥ अथ वाधिसमियत्तां सत्त्वा निर्माककां क्रया मास ॥ ४ ॥ निरु दानन कविष्यामि स दस र्त्ता ॥ ४ ॥ अथ मूर्द्धिका विष्यामि वादः
 म्मा वस्यदव्ययना ॥ ४ ॥ मा कका मं उगत्तु स्तं संयुक्तसां स ॥ ४ ॥ निरु ॥ ४ ॥ अथ वं वाधिसत्त्वा सत्त्वा सत्त्वा धीमनः ॥ ४ ॥ यववा स मदीं
 त्वानो विवा म्हा सिवा यन्ना स सत्त्वा सत्त्वा गन्धर्वा ॥ ४ ॥ कथे वद्या मि संस्तिना ॥ ४ ॥ अथ त्वान ममदु कंदानं विस्मयं यं मं यय ॥ ४ ॥ अथ

^{२२}
 वाधिसत्त्वाः न्यगमकलसंयुतस्वमा मनुयतः न हित्वा सोम्यममगः प्रविस्मिन् विववादिनीतिनां विमंययदहं विवका
 संलयादिममनं वा कसंगयिष्यामिमात्मानिवसायीवाः कृत्या सोययक वउ कामस्य विनया मित्रवैकसीवदू
 स्वात्मा हमाधुयया कलकल ४ कगां जलियूदा वाधिसत्त्वस्यादयानियत्यकथयति ॥ यमोददवना हस्यनं कर्तुं नाहम
 म्महदवस्यकायमसुं निगमयिषुं यदि वादं कनू एतत्तु कवत्सवसा न कयुलसु मदिनस्य कायमसुं निगमयिष्यामिः
 नियगमसुं सदेवमा कलनं वकयति श्यामिनि ॥ कृमाला रूकिवा धिसत्त्वाः सुषुप्तित्य खानयु कर्मसु मभूगमा वाधिस

१५

त्वं स्वयमवती कृमं गृहीत्वा तलाटदं हत्वा मित्राभाकुं काम ॥ ममाकावयामास प्रथवा कलसूयादिमादवी
 वयमावती कल ४ युवगलय विवृताः प्रन्यथ मस्य जनकाय ४ सा ह इदिनेती वदू ४ स्वात्मा हमा वाधिसत्त्वस्यादयानि
 यत्यनिगमयन्त्री वदेवायं वा कसाय ह विद्या मं कर्तुं नागम ॥ अयमहि सर्वसामयिना कसां य ह विधन्ति नवकः ॥ ति
 स्वसीददवमा साहं संकनू मास्मान्मावती सयुगां यतीत्यज्ञमा दीना स्वकृयभवनीयकयावनकाननाथानू कनू मासा
 कवद्वीया मया ॥ अथिवमहाजनकायत्वायुववत्यनियालिन ४ ॥ तदियागः म्महदू ४ खदीमनसं यदिवदयगया

वनकानां वाष्पविद्यागारविष्णुनिवृत्तद्विद्यागदग्निवयद्यावतिप्रसूतानां ४। पूजातिमसंययासंतिस्मादवेनवाक
 संमानन्यः। वाष्पविद्यागदग्निवयद्यावतिप्रसूतानां ४। पूजातिमसंययासंतिस्मादवेनवाक
 स्वावध्यनेवाकविद्यागदग्निवयद्यावतिप्रसूतानां ४। पूजातिमसंययासंतिस्मादवेनवाक
 दानपात्रमिमिकायामकनयंकुं ॥ कलस्य हयस्मान्निविनादानपात्रमिमिकायामकनयंकुं ॥
 नायनविनासगमगादिदाने ४। विपर्ययकनसामानाहकितवन्नाममदानपात्रमिमिकायामकनयंकुं ॥

२०

ल३

ताधि३

महाजनकायसंमाध्यास्ययमवलसाददग्निनामस्कारं वाकसंययासीवेकपूजवत्कृत्यमायमानं उवाच ॥ नदिवत्सम
 नावर्धमवविपूत्रययकिस्मादकिंसांयिववृधिवंयावदाकमिल्यवमकंसवाकसवहाधारीकादवन्दुइत्यायां मुखे ईडं लिं
 कलकदाधिसंयवृधिवंसमृध्यायीयमानंदहोयामास ॥ अथ समहाजनकायसंयवृधिवधवांललाटान्निष्कस्यवाकस्यः
 मयनियककी नृदूहाककन्दवावाकसनरुद्रितः ॥ निविदित्वाविकाहूमात्रया ४ ॥ वाधिसत्वापि वृधिवधवांयतनूरवकी
 माताकायवदोर्मनस्यमयगत ४ ॥ अथ गकाददुस्यरावमाहाययकाहायिडकामंडवावमहाजमादेवविषति सा वारुः

नो

^{रु}
 धेयमात्म्यादहं यदहं नाधाय स्वद्वयं संसृजयन् न वाय ॥ विप्रं त्वया हृदया शिवा श्चिन्तकदा त्वसुकमांसवसासि स कुशिरु ४ दि
 नं प्रकुर्यामि दददिनां संदृष्टव क्रमा ६ ४ खलु वाधिसरुमां ॥ अयं सकाल ४ मम वरुमा ६ यमां मने विप्रं त्वया विप्रं यत्रीत्यङ्का ॥
 क्रुधात्री कं कुर्यात्तन्निष्ठा वरं कं यामियावमिं यां वं त्यजिते रीतयार्थ ॥ अपि य शङ्कदय कृत्स्नं जगत् विना उ मद्य कस्या द्यत
 कुरुमं प्रकृता कमनीसा कं कुरुं धेयस्य दद्यात्ता कर्म कं य न्महसे वय थिष्ठां नियमित न धा अथ यद्म वरी न धा नियमित कं वा
 धिसं त्वं दद्याती वद ४ खा लो ड त्या द्यमान ददय वय की लु कभी ड व सा उ यानि स ह से व वाधिसं त्वस्य ६ वी रं यत्रीत्यङ्क क न र्ण यः

२२

३ र्कचि

विदविष्णुमा वसु ॥ हा हा दवय व म धर्मि क ह म हा का प्र सि क य दान न्नाला क ना थ क मा म ना धं व न व रीं य थि त्य ङ्क य व म
 दृष्टि र्मां य या मा सि हा य सो द द व वि नि व र्ह स्त न नू ग म म थि र्क व र्ह म ४ य मि ह्मा र्क ना हं य द्या व र्मिं य थि त्य ङ्का मि नि ॥ सो हं
 नि य वा धा त्व या ना थ य री त्य का हा ह म मि र्म हा रा ग म न्द्रा ग्म स दृष्टि र्म र्क ना हं ना न द्या त्व यां थि मि ना क मा सो दं कि म म
 ग्रा य मि दि ष्म न य मि ना को म ६ ङ्क र्म मि म ना थ ददयं वा द्य वि सी द मि त्ति ह्मा न वि ष्म ६ र्म ना क मा सो दं कि म म
 ना वा नि स्त द्या यं ना वा न ल र्दृष्टि र्म र्क ना हं ना न द्या त्व यां थि मि ना क मा सो दं कि म म

॥ अम्यदं ॥ कमा न्धकारं रुवति दमयसू गोवला कानल गुष्ठि गया ॥ यया न वृत्रा पिङ्गत्सम मडका मिमद व विना लयाः
 द्या ॥ रुद व कि ग रु हं मा म ना थं रु ॥ ४ ॥ वि गां सं र्य अ क य धं दी नां रु र्ह न ला ल सां रु ग रु न ॥ ४ ॥ य रि ह्य सं यि रु मे यि ल्या
 न द्य न ल्य क्रामि सु गा न हि मि मि नि ग द्वि र्गं थं ॥ ष क्ता द य मे द्वा वा वा लं ह द र्यं म मा ॥ द द्वि व द यि गो म कं पु रं यं कं म मा प मां न
 न्य सि द नि व रु स व न्धु ही नां पु र्यां स दा ॥ प द्या व गो म ना र्थं ल क वि द्या य ग मि य सि ॥ क्थं थं ल या धो व ग रं य मि मि नि नि धि
 रं पा द गु ष्ठ शि कां द वां दा सां न य व मा म पि त्व न्यि यार्थं य वि ष्ठा मि प्र या स्या मि स ल्या ॥ ४ ॥ ल व म न्य थ व म न्य थ व स व रु

वि ल यं गो न्द वां द द्वा स म रु ज न का या रु य स्या मा रं कां या ॥ अ का त्या रु ग आ रु स व वि का रु मा व रु ॥ ४ ॥ रु मा वा धि स ल ४ सं ह्यं
 मि न ल्य वि रु द्वा सी वा म म व धा मि कां व द नां वा र्य व ल न य मि र्ग र्वा न व ल ना रि रु य कि न ल ग्नां स ल्ता य मि वा जा ला व धि व धाः
 व द्य व ना स रु मे व स रु द्वा र्गं वा रु स म रु वा वा था गु द्वा क द रु नि ग व म या ल्क ल्य स मां सा नि न य रु व रु फि र्जा ना रु दि दा नी म रु
 रु रु स क रु स व रु वं द द्या मि ता प रि यू र धा र्थं सा ध मं ग रु द्वा ल य रु द्वा वा धि स ल न ना रु स व रु धा वी रु म रु ड रु ल्यां वा धि स ल
 रु वी रं ग रु द्वा ल रु रु यि रु का म रु वं ना म रु ल्या स मा का व या मा सा ॥ रु गो वा धि स ल ४ वी ल्या स मा पू र्य मा रु ह द य ड वा व रु न

[illegible]

२५

मया वा ॥ मिहा वा ऊ ॥ का मि द व न्ना ना दं वा ऊ ॥ स म्म धर्म कथय मे रित्त्व मी द ॥ हो न दा स द्द क व ध य व सौ व किं यार्थ य स ॥ नि
वा धि स ॥ त्व ॥ कथय मि न को षि का द म न न स्र गरी व द न न म क र्त्त यार्थ य न य क र्त्त न न स्र ॥ मि त्त्व हि न व क्त व र्त्ति वा ऊ ॥
ना न्य मा न्म सं रा क्त म पि त्त्व न नानू रू ना स म्म क्त वा धि म रि स ॥ य ध्वा नी ध्म न्म त्वा न्ना ना य य म म क्ता न्ना व य मा ना स्र म्मा ना ष्ठ
स य य म य नि नि र्त्ता म्मा नि नि र्वा य य मि त्त्व न द द्वा र्थ य ॥ र्त्त म्मा म का द व द ॥ य र्त्त वि स्र य म य ग न स्र म्म क्त य ति ना
त्य र्त्त म हा त्म वि र्त्त य र्त्त मि र्त्त य रि क्त म न र्त्त वि र्त्त ॥ क न्ता क्ता य पा य ॥ स्र य ना स्र य थ यो र्त्त ॥ षि गरी व स्र्या दि मि न स्र

अवि

वैदिकयज्ञतदनुवक्तुं ॥ वस्तुदमस्यसंशयलाहि ४ सजीवनो शिरोषधिशिः ४ कार्यं जीवीनं वसंधायसत्याविद्वान्ः
कावयमवमस्योत्रोदधौ वस्तुविषयि ॥ अग्निविपुलवाययमः ४ एवमनूविचिन्त्यभकादवन्धावाधिसत्त्वसयोः
पुंसावलाहिस्मंडोनीशिरोषधिशिरोपूर्यवाधिसत्त्वमवावमहायोजकदेवमभवीर्यस्य भूमीनीत्रायमित्यङ्किताः
वायविद्याश्चावास्तुत ॥ धनसान्नाथत्वं विपुलिसायावतिवासत्त्व ४ कथयति नमकोशिकरं वसान्नाथत्वं नायिम
कश्चिद्विद्यमिसावर्ग ॥ ४ कश्चिद्विद्यमिसावर्ग ४ कथयति नमकोशिकरं वसान्नाथत्वं नायिम



३ यो नाममस्तु धेव

धिंमनसि कृत्वा नूतनं मेरुविरुचामयस्तथा सखां वलायांगमथराष्ट्रं ॥ यथास्वमांसा निममांशकृत्व कपावसाश्चाधि
 वायसस्तथा नूतना विप्रति सावज्जगंसास्तथेदीनत्य विवडीकव ॥ अनसत्वनसद्वसनप्रयुष्मान्वावनवमहावीर्यं यथ
 वंस्वत्विदं संय विप्रूर्णमिति ॥ अथ गमथावमानसमकवमवसद्वसेव वाधिसत्त्वम्यमविप्रं यथापीना लं संवर्क ॥
 अज्ञानकवच धिका व ४ यथिविकम्वाडागगगनगलममेह्यन केय वनाहागसद्वसेव दत्यसूतं दवमनूयावर्कः
 नकनंयासिदिर्यदृष्टायमूदिनद्वये ४ सद्वसेवदादाकावामक ४ दिवा वविदिजं सद्वत्यवर्षमस्तस्य दिवा निवाः

घानियवाहता नि॥ अथ समहाजन काथा वाधिसत्यं यथा यो वा घनो वदकायं स विस्मय मयगतः ॥ कन ४५ काद वन्द्य
 वाधिसत्यं यत्रियुर्मुहावीरं दृष्ट्वा विस्मयात्तुल्य दृष्टिः ४ कन ५० त्रियुगा वाधिसत्यं क्रमयितुमावद्धा ४॥ कन ५५ महावाजयः
 नयात्वं मे मां सनाहियाय मनीषा रिमोसिद्धेन वदना रि ४ संथाजिना ५ पितृयदा त्वमनूहना संख्यं भ्राधिसति संव
 ध्वात्तुदास्मानपि समन्वदत्तं ५५ त्रिवाधिसत्यं ४ यादा कानं कोमिकनवं रवसुसमत्वा दविद्यामिति ॥ अथ ५५ का
 दवन्द्य ५५ कदवता ५५ कन ५५ ४ साद्विवाधिसत्यं मरिसनाध्वनये वा कदिन ४॥ कन ५५ वाधिसत्यं कस्मिन् रूयविसमाय यहावा

२५

टानि कन्यायहनधनधाधं सुवर्षदस्मिना ५५ कन ५५ अथाना रवध्वानि वक्तुं यना सना निगमवर्षा कना का ५५ स्वर्तं कना ४ कन्या ५५
 मधवाक ५५ ददांति स्म ॥ ना ५५ ५५ दृष्ट्वा रगिया नि सो मा रा ५५ ४ स्वदस्मिन् विविधं दक्रि धं दाययित्वा ॥ कन ५५ ५५ मया यिः
 नंदस्मिना गंतं व ५५ कन ५५ ५५ वनसुवर्षस्य ५५ कन ५५ ५५ वक्रवथा ययूना हिना यानूय यक्रि ॥ अथ ५५ महावाजा पूना हिना
 यं रुस्मिना गं दियमानं दृष्ट्वा ५५ कन ५५ ५५ दस्मिना गावाय क ५५ ५५ पूना हिना यदायं पूय मववाय क ५५ ५५ वाजा रविचरि ॥ य
 स्वदं गधकुर्या यथा पाणि सामानां वाहं दिय न ५५ ५५ विविदिता वाधिसत्यं मवाव ॥ दृष्ट्वा क ५५ ५५ मन न दस्मिना गन किं

५५

कंकविशिशिअयिवाहमवदायदामिनि॥वाधिसत्त्वयाह॥महावाजस्यवायस्यासीगजवत्तस्मिन्महाहिल्लाधामयावामेय
 विलक॥नन्नाहमंकंस्मददत्तायूनवाहकुमिख्येवाधिसत्त्वस्मयेयवादिनायनंदस्मिन्नागंनिर्यागयामा॥नन्नावाधिस
 त्व॥यद्वावत्तादद्या॥यिगत्रंरुतिमृषिमाहूयसादवदंतांऊहिस्रवावा॥मदयेयनयागकवयतिह्यनयहमेत्वंमृदिः
 ॥धवद्रावगीसुगमदियसिचिकमयामृदि॥निर्गतामदायहः॥स्यावत्ता॥स्वर्मासान्यायिमयास्मिंयहदहानितदवम
 वविधंदायमंनत्समस्मिन्वयत्तसर्वमेवाहंनवान्युक्तामिह्यममधमत्तादयति॥नर्वमंकमयि॥यमृदिनददः

२९

३२

यत्तवंमस्तुनदावाजस्यवाधिसत्त्वयथामनावाधिताइन्वयाति॥स्वामिर्हि॥समयगमभास्यसपविवात्र॥यकाक॥वाधि
 सत्ताधिनियगंयहमिह्यावतकऊनयसिलिषिषेयथविहमंमंनयासंयप्रियूर्ध्वकल्यानगात्रयवत्कामा॥हृत्॥नन
 लयून॥ममंयनवाहीकामदविडी॥धृष्टमदधृकावाधिसत्त्वमयगभादवावत्तादावाजममायाधाय॥कस्यायागमामा
 नीविनामहिमवतिंयवन्नाऊआद्यदयतिवसत्यनर्षिसनयत्रिवात्र॥नस्यमगवदाधयनंयविसमार्फंननामयानिय
 त्यासिहित॥उयाथायाह्यायनहंमुदद्विर्भाददामिहिसकयतिवत्तयदिलंरुह्यामंनमसिबूउस्यवृद्धासिचिक

२३५

वैपथि

शयनीयहृत्पुतासम्यान्वं वक्ष्ये ४ कृमात्रायुवत्राजयसमापिपिनिवात्रकयूरं गुददक्षिणपयकमि॥ नददसि
 वनमांयद्मावगीद्वोपुनसहिनां मद्रं दानुमित्यथमवाक्रक्षसुस्यं वत्रायी गमथ रायक ॥ यमिगमनहं कृत्स्नयिथिर्वी
 काश्चमात् ४ ॥ पत्रिभान्क४ सुविनं गुर्वदक्षिणी ॥ तश्चत्रलिकालाकसर्वस्मिन्मसुधा नलसर्वपदः ॥ निर्याग४ सर्वसत्त्वः
 दिवक४ ॥ ४ ॥ नक्षत्रं नयस्वीवद्विवाक्रक्षनवच ॥ मुतिद्वलरयाधोवगुददक्षिणयारु ॥ नल्लाधूममहावाजययक
 कयमासुति ४ ॥ यद्मावगीवद्वीत्तयहृत्पुमांयति वनामिति नवमकवाधिसत्त्व ४ सह्याकृती कृत्तदयश्चिकयाः
 य



मास॥ कथमिदानीयद्यावन्निदवीकृमात्रमयाविनाजीविनसंधानं शिष्यानिगा॥ सद्योवासापर्वदिस्समर्पय्यवचनं
 त्वानीयदू४खाह्यामाकिमिति ससंगमासं विग्रहसमवस्थिता॥ नतावाधिसत्त्वपिमरुर्लक्ष्मीहस्तासंलज्जयतिप्रनूरुः
 रादिर्मयर्कं स्नाधिर्नयुगदानेविना६वाप्यनगस्याद्यास्यामिथियामिमांशार्थयुक्तः शर्मप्रियमस्मेवाकृष्णयशवमनूवि
 दिह्यवाधिसत्त्व४यद्यावत्प्रीत्यववलाकयिगुमात्रद्व४॥ प्रथयद्यावन्निदवीकृमात्रमयाविनाजीविनसंधानं शिष्यानिगा॥ सद्योवासापर्वदिस्समर्पय्यवचनं
 त्वानीयदू४खाह्यामाकिमिति ससंगमासं विग्रहसमवस्थिता॥ नतावाधिसत्त्वपिमरुर्लक्ष्मीहस्तासंलज्जयतिप्रनूरुः
 रादिर्मयर्कं स्नाधिर्नयुगदानेविना६वाप्यनगस्याद्यास्यामिथियामिमांशार्थयुक्तः शर्मप्रियमस्मेवाकृष्णयशवमनूवि

तस्यैवाद्यानियथावाच॥ दक्षस्य कृतवर्त्सकल्या ४ यत्रियत्रयगीमनाप्रथमपत्रियूनयदानयात्रमिगाययकमामविक
 ल्येनाः सोवाकृष्णयस्युगिका मिलयथयवल्याद्यावल्यारुक्तमनाप्रथमवर्त्सकल्याचयविस्मयभूयगता॥ गताः
 वाधिसलोवाधोमनः ४ पक्षिधयादिकिधनपानिमीवर्त्सकमादायवाभनयाधितायद्यावमीदवीयुगसहिगीगृहित्वा
 र्त्सवाकृष्णमवाय ४ यत्रिमिसीसपूजावगृयाधत्वममद्विज्ज ४ कृपयाननसर्वविदानतयायूयामर्दं ॥ ॐ लूकावाधिस
 लोतस्यवाकृष्णसहस्रवाधियायीसास ॥ जूस्मिन्धनकयवद्विकार ४ यथिवीकृत्वाजात ४ गगततलममेवद

वगाधनसहस्रस्यनददुनयत्रिल्यागिगीविदित्वाविस्मयमंघर्षुमनाशिवहा ॥ लोकत्रवेनायामकृष्णप्रथमोवादीका
 नामअवि ४ यद्यावमीदवीय ४ सहर्षेमन्वमाहा ४ गगकृयत्रिययतांस्वामिनामम ॥ लवमकृयद्यावतिदवीसा ४ इदिनव
 दनाप्रदकीपावावा ॥ वाकृष्णमहर्षकावलिकृयावद ॥ सहर्षेदधर्षनदवसाभर्वककयामययधिमकमिनि ॥ गत ४ स
 अविमहर्षमिह्यायद्यावतिदवीयुगसहिगीसमादायस्वमित्युक्तात्त्रिममाधयमानोयगुला ४ पाथोनत्यागुला ४ योदो
 नंलांगुवदक्रिधार्थनिर्यातयामास ॥ वाधिसलोपि ॥ पूवधूपत्रिल्यागंकृतानिर्मन्यनाहदयनसाकर्मनगवंपविह्यगी

४४ सदादीनामिमीमां कृतियान्मूर्धोरिषिकान्यथा नये ४४ सत्त्वावति शोषेयस्य ययत्तु नैव कालं काह नय्य सर्ववृत्ता हस्तः
 ४४ वथादिदि ४४ मिमान्यन्मनिस्त्वानि न गाना नित्यवयासास ॥ अथ दूष्य सदावाजा गतिर्जैगेव नर्वमायनाहस्तिना पूर्व नः
 गत्वा मात्य ४४ साई संडल्य कृत्वा वाधिसत्त्व स्य दग्धवयासास ॥ न मा वाधिसत्त्व मय संमो वसमाह दव दूष्य सदावाजा ४४ वं क
 थयानित्वं मम मित्र ४४ सुद रुद हं सिमं न रुहस्तिना गं प्रयथि उभवं क न सत्त्वाधि वस्तिनि कं रविष्यति ॥ नावन्मयसि न
 नायागसु क्रियेदलकं न स जात व न वाह मागल्य वरा क सं भर्त्ता निहृत्वा स्वयं वरुहि नागं गदिष्यामि ॥ ४४ वं मक सा यव न

३०

काधनकलाय नादसु नहसं यनाह लगी वद पयं वस्ति नास प्राय दं रुत न वे सव वं नू स लमान् वयानि नंदनं निरुत्सया
 मास ॥ अथ दूष्य सदावाजा व कृत्वा ४४ स दूष्य जीव ता कपिया व द्वा मी वरु कृत्वा ॥ स दूष्य निषालाय स्य या व न ४४ क्रिय दः
 लय प्र ना कम रु न स जात व ॥ न नंदनं वद न ग व लयं सं ना कृति निषा स्य मा व द्वा यति ॥ वाधिसत्त्वा कृ ४४ नादी गान्मा
 मिनि विदि त्वा दूष्य सदावाजा निका नू मत्त्वा य मां पयं दय नि निवो र्ध नंदन म वा व ॥ श्री म्म सु सदा वाजा ४४ द ल्या द व नि
 य स्या द स्ती वा कृ ४४ य वादि मा य य दू द कि ४४ र्थ नि यो ति न ४४ न नाह मूत्स द दानं द ल्या प न ना ४४ व द दि यान् रु स्य व न

२३

उत्तरं न॥ तत्काऽसाव्यायऽस्वाद्यनाहमस्मादाकवधनाल्लग्नयडरुगादिमकाविधिकवधमकेयवधमसर्वविः
हूनयमित्यवमनूविधिन्यवाधिसत्त्वादीद्यमूर्ध्वारुनिष्ठस्यगगनतलमयत्नाकयामास॥ गुरुकवयत्नावधयत्ना
कववृद्धास्त्यवगसाविरुमाहायमद्यायविधिरायसाहागयवाधिसत्त्वायामादस्वमाह्म॥ अथवाधिसत्त्वाय
साकवृद्धादृष्टायसादजानधयादयानियत्यमहाहार्दस्वासनधनिवाद्यकरीजलिन्वाव॥ महर्षयधयसीदधर्मविः
मययकाद्यत्वायऽमकान्यवस्थितियाययनयजाहमकाकीनीष्टमाविधिसत्त्वायविहयमिति॥ ननस्ययकव

[illegible]

उक्ताः सिद्धिः सवति यवमना ऊ विद्वद्वयं मकालं ह्यत्वा उपसंक्रमिष्यामानं पूनवपि गृहाय माञ्जराय उक्ताः कर्मकरणी
 यत्पुष्पां मयुः कवृद्धास्तु ननु यत्रिविहाय सा मञ्जराय कान्ता ॥ वाधिसुखं दयितुं सिद्धिं वनमलं ज्ञात्वा मयि
 लावमप्यगम्य सुखस्य मयि हवमिस्मा ॥ यावदयं वक्ष्ये मय न वाधिसुखं सो न ददयिष्य ॥ ३३ ॥ यीपसदृशकाठवकाखवः
 रागवराय धमः ॥ पूर्वपार्ययथ कृत्वा शान्तिं स्वर्गवना न कं ॥ स्वर्गेषु विविधका गालुष्का कामविमादिना ॥ पृथङ्
 क्षमन्यपि क्रोधा रवन्ति न व कामूणा ॥ न व का व दनी की वी संयाय वानूनापि ना ॥ धर्मो नृसुत्रं लंगत्वा रुवन्ति सुग

३३

३३

मिंगना ॥ ५० ॥ यवविधिः ४४ ॥ खरवह्नाः ५० ॥ तानूनयतिग ॥ गमहस्त्वविषया प्रायानि यागी गथा वनं ५० ॥ तन्मनमिधमा
 त्वया गमनामममिह ॥ धर्मो ह्यसम किधीमा ॥ धिसुखाम्दा वमग ॥ मगयनि ४४ ॥ मगया दया लक्ष्यं ह्यवदा कन मम
 ननित्यं ॥ यत्प्रादिदं वक्रकार्यं ममत्ता मय वक्रं मम मं नृलां कों कं ॥ मेरी मय नय मम नैत्य निने वानय ग्री म वि ला ॥ यः
 वस्य नृत्वा हनि वृत्तान् नृत्वा सुयसि वद्या सुमम वि व ॥ ५० ॥ ५० ॥ यानि रुमायु यत्वा स्तं कायथा गमत्त वृत्ता ५० ॥
 वृत्तं ॥ ५० ॥ मम सु न स्या पि कुन स्या ला क सं ॥ ५० ॥ मारुतियस्य यथे ला क ॥ मूल्य कृता वात्क रुना रि ह ह्य कृत्वा दाः

कि

नि

लाशयमः॥सर्ववसुदवतानामपिमानसानियमादरकियवत्तानिर्वक॥दृष्टधर्मवद्विर्नवनसुगुलेसुदी
येनवद्विक्ता॥सुविविक्तायुवधर्मनक्तिशमीसिद्धिमित्रायकृष्ण॥भीलधुवाविष्टियरावनायास्मयपः
माधयधिकनार्यामेयादिकवेवसन॥समाधेयधर्मवर्तमानममसहिष्यान्॥मद्वन्द्वधर्मकथिनीसामासान्मयाशक्त
यनियान्नियान्॥धर्मोदिवकायवविमविष्टिमेमद्वन्द्वधर्ममेवतानन्ममी॥यत्तस्यथागमविमहावसानाधर्ममेव
याध्यागविष्टिनिष्ठा॥विष्टितानांरुगुनसान्मायुक्तनेकार्योदृष्टमयमाद॥दाननभीलाशयवधर्मसामान्यधर्मनि

३४

म

संवर्द्धयितुंयमधविष्टिमानस्यसिद्धिनादृगेष्टाकस्यद्वधर्मनियनायनिष्ठा॥तामागर्भमरिखयलक्ष्मीविरागियत्कानि
गुलनसामशाकातीषिवाकस्यसद्वन्द्वधर्मनियदीयातयुधुगुलधर्मकृष्ण॥दृष्टसुखावाधर्मविवायाध्वयन्मयरावात्
थिविष्टिमानस्यसद्वन्द्वधर्मनियदीयातयुधुगुलधर्मकृष्ण॥दृष्टसुखावाधर्मविवायाध्वयन्मयरावात्
नीतिमीर्गधर्मधर्मिके॥साधवत्तस्यधर्मनाययुधुगुलधर्मकृष्ण॥दृष्टसुखावाधर्मविवायाध्वयन्मयरावात्
मयनसाम्॥भीमस्यसोखादयसाधनयुधुधर्मनियदीयातयुधुगुलधर्मकृष्ण॥दृष्टसुखावाधर्मविवायाध्वयन्मयरावात्

एतेन सत्त्वा नालया वन शिङ्गम् ॥ अवित्रगमय सहायसमस्तत्मा विहासाय द॥ अथ असेगमनाममहर्षिना ग
 ह्यतस्य शर्वजिह्वा सिर्गुतया नरयैर्दक्षयक भक्तदवायक ॥ तथा वनमहायाङ्गना नाद्रुहयैर्करी ॥ निवासिना कुमादिना
 कथं सुखमादहि ॥ अनयश्च कर्तुं ध्यानं कर्तुं वसन्तसि वसतिष्ठ जना ॥ यायलं मित्र ह्यलीदं त्वयानूकं नयकाः
 ॥ आश्विनस्य तिथिर्हि मरिचमेयदायं वनम् ॥ श्रीमंति हि त्या हवना न्यमस्तं कस्मादवत्थ प्रमज्जिकायि ॥
 वनपुसा दाजिगरेरुहिवगल्धमानः खसवङ्गननकूचनरुहश्च सुहृदिहीना वना नरुमावपविद्धकायः ॥

३५

क

२५५

मर्लदविद्वत्त्वमिवा यगुक्तकथं न ॥ आकस्य वसयथासि ॥ अमाभवस्तीह न वक्रमा धाद्विषापिषायापिदिनक्र ॥ ४४ ॥
 ॥ नद्रुक्कया र्कम्बुजाना नूकसदी नाशुवया लयनाथमिह्यं ॥ संयादयथ निवर्तस्त्वमपधर्मैश्च सत्यक्रमनायथं ॥ किं लाः
 कयवा दशरत्नयिच ॥ यत्र कर्मकन्यापि स्थनिवान् सखागल् ॥ किं पुनः ॥ मुखसंयाका ॥ समद्विकलिनहीय ॥
 अवाधिसत्त्व ॥ पुविषक सखा मग्नसयवित्यविकम किं सत्यवसद्वदय ॥ समुपलक्ष विहाया गहनवासया ॥ कथायशमः
 निमेषमाया रुक्मश्च शोऊकथार्य सखायमान उवाच ॥ ४५ ॥ दक्षिणद्वारा नाला रुका मम त्याह्यं ववः ॥ मुखसंहा शुभावा

म

व

एकदा विगृह्य यवानां भ्रातृ ३४॥ ग॥ हस्तं मरुदस्ताम्भं सनत्याधनस्य व॥ न कस्य वक्रधायसा दिवस्यार्जनकामाः
 नृणां यज्ञनामसुखनिवसधनस्य व॥ ग॥ शिवमिसमाह ४ पावस्ये वक्रुला दय ४॥ नियमांजनवक्रनादिद्रु ४ ख वंध
 वधनस्य सनेकलक्ररुग॥ नृपगवयियगुमासिख्यि विरुवेस्कायनि (धवि वम्यवय ४॥ समगुक्रम ४ कथं कः
 दावायत्रिकल्ययधयनवद्रयेति विषयायनिवधन विमाहादुगकधुयभवत्सुखाणिमान ४॥ वाहल्यनवखः
 त्रुविमिषाय ४ समध्यामदमनि गमानकूलनायिमदनदयद्रु ४ खनवायं यमननदन्यनस्मिंकदास्यान्यम

३५

३५

३५

माव ३४॥ अ॥ नृधखल्वकुरुवक्रमनूनयामि॥ मदनडुगमयलर्यय ३४॥ शिवमिसमाह ४ पावस्ये वक्रुला दय ४॥ नियमांजनवक्रनादिद्रु ४ ख वंध
 र्वविलयवद्रु गोवद्रुव निलयं॥ संकुक्रुन गदुयु वि कसुखवन॥ वसीदगियथावमि दिवयितथाक्रम ४॥ यत्र
 साजिगवदिवयका वमवना कषूकवलमैरुन ४॥ अ॥ धर्ममिभुयैर्वन कामयविषयसंयकमिवाप्तमात्मवान्॥ ३५
 वमक्रमननगमगमादयगुहकनव वसासवक्रुवानमवगमिनाहसत्त्वसत्कावयडागवि (३५) नसंवाधयन्नुवावसा
 धमाधमहाशगतत्वमवविहूनदन ४॥ क्रायुगुजसमत्थासिध्दानसोख्यसमाप्रहि॥ गगावाधिसत्वाध्मा नावाम ४ यमि

सखर्मवदयम॥ ॥ अथ साकेतनगरसुखाद्वसनीयवत्सविषयकाशीप्रवाजकवसनकथयाद्विमितिमत्या
 महवमेवीववाहर्मगत्वापश्चात्तुवकमार्याथावद्वहिवत्थनिष्कीयवाक्यमिच्छाया॥ कनद्वयद्वसयाजानंविजिकः
 वान॥ मरुत्साहंकावयामासुषाकनवयथिवीकयनिमित्तदधमात्कमिच्छामनिविद्यादवजोयोधर्मनामदवयूज ३०
 मगवावत॥ धर्मगच्छमद्विहमनिवृत्तिमिसामयायद्रावनीवलाद्वत्यमसिब्रजयदक्षय॥ नत्थमिधर्मनामदवयूका
 दवद्वस्यु। न गृह्यद्विमवगियवेगयाध्वयमात्मानमस्मिन्मोयमवीमद्वयवाहीमंवीमंद्वयवाहीमयद्वजगम

॥ मगवाध४॥ ययगद्वस४॥ धनविमल्ययवोवेलप्रोद४॥ यिर्मवावगावद्वयकाकेम॥ द्वाह्वमनूकमाझं४॥ यद्वा
 वनीयावसुकासराहीपूषानिवित्वायवलायमाना॥ वलात्यगृह्यवलायमाक्रीकद्विककवेयवलत्सल्य४॥ नर
 ४सायद्रावनीरुविहलाझाद्वरुसीवकाहीकीत्यामिर्ममसिब्रजमनूस्मवनीविललायदानथत्यामिर्ममायाद्य
 वगृहीर्मानवकमिक्कथमूयकिनादयालुनाल्यानाथनसराऊनाथमिववीवेयद्रियमानीसाकाममरु४यवम
 धर्मिकत्यमहाकारुनिकसर्वसत्यवत्सलस्यमहावाजमनिवृत्तस्य॥ मांमदिशावह्वीकथयिष्यमि॥ द्वादवकावृमि

स्वामनयाकां॥ अथिच. यल्ययाहस्यमकालममयुमिहमनीहंतयाविनामदूहमपियानांसन्धाययागीकि. तदिः
दानीकथमन्यथारुनंतद्रुहिसमीधुमयविजासंकव. कथमिदानीवाहृकप्रियस्यमधुर्हविकस्ययस्यगनवकिः
नामाहुत्तयायायहानं कर्वकीत्यथवाधिसत्व४प्रकययायविगनददयादयाकवृषकवृलेवविरिष्यमानसमन्कित्रागा
नंरुययनूवावा॥ अलमलरुदमूरवामेनीलियमद्वगमद्वयेमात्रीव४कास्थयसलगस्यगनय४हमायायधस्योयस्य
पिकानद्यावदस्मेनजानोमनावहीधुमूक्कागच्छतामादेवासीहृत्वाययमानसर्वानादनाभा. पागिननामकदिमि. नन

सुकियातावाधिसत्वस्यपनिहृ. यभावरुयरीगत्तदसेवदवीयद्यावगीमत्त. सुनिनिष्यलायमा४॥ ॥ नन४
यमावगीदवीगत्तालिनामात्यविमकावाधिसत्वसममयिबमनिमिषानिबीकसर्वेअवीयसवाधिसत्वस्यपादया
नियत्यगीवस्त्र। हविकवददयापूरुहसर्वकंदिरुमाना॥ गगावाधिसत्वसांसमाभ्यस्येनूवाय. रुदनुर्वयिय
विषयागेवपिकयसस्ययागेजिगिडवावाधिसत्वसमकयविदयद्याविद्यादिरिबनेके४खसहसं४संसावनिः
वासिन४सत्तानंत्यकंपीयमानानददृष्टवासीधयोधियत्यंत्वाक्षयदायसत्तानां४खक्रमवक्रसाक्ष५थकात्र

व्याख्यातनं स हि न ॥ १ ॥ न च व काम धा लो ॥ २ ॥ इ सी मा वा धि स त्वं काम वे रा ग्म न्य या व वि उ का मा मा धा
 व ॥ ३ ॥ ना त्मा न म रि नि मा य वा धि स त्व म य मं क म य व मा ह ॥ ४ ॥ मा र्घ ॥ ५ ॥ य य द्वा व रि द वी त्र य यो व स म्य ना त्वा द्वा य वि य न य
 नी म रु द् ॥ ६ ॥ य य न र व रि ॥ ७ ॥ न द र्हे स्य नां क द् ॥ ८ ॥ इ ॥ ९ ॥ वा ना व रि ॥ १० ॥ न स्मा द् ॥ ११ ॥ त्वं म द्वा ना ज्ज द वी मा द्वा य मा क र्म न ग रं य
 न त्र यि ना र्जं का न य य ह्नां ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ न व न न न ना लं स र्ज वा सा र वि य नी मि ॥ १४ ॥ न वं म क वा धि स त्व म्मं ल क य नि का र्य
 मां मि ह ॥ १५ ॥ यि य मि म न् ॥ १६ ॥ या वा द्म म् ॥ १७ ॥ या व रि न मा मा वा व ना व य म् य म् क ना स्मा कं न या वि द्मं क र्म मि नि वि दि त्वा क

४०

ध य मि ॥ १८ ॥ मा व किं न जा नी ष वा धि स त्वं स त्वा नां वि मा र्का र्थ द् ॥ १९ ॥ न स ग स द्मा नि क र्वा र्म मां त्वं श्वा द यि ॥ २० ॥ मि द्म मि
 वि ॥ २१ ॥ मा व वि द्ना स ग क्त्वं य थ य म्म मा र्घ स द व ला का क ॥ २२ ॥ स मा य क ॥ २३ ॥ स य क्क क ॥ २४ ॥ स द व मा नू या ज्ज ग न्म य या क् ॥ २५ ॥ मा म
 स्मा द्वा व सा या द्वा व रु यि क्त्वा या ग व त्वं इ यी क्त्वा य ॥ २६ ॥ मि ॥ २७ ॥ अ थ इ यी मा वा जा ना मि म न् य म् यि ॥ २८ ॥ न स्मा वि क्म मि मि वि
 दि त्वा इ ॥ २९ ॥ र वी द्म मा वि य मि सा री न र्म म क हि न ॥ ३० ॥ न मा वा धि स त्व ॥ ३१ ॥ य का कं दू यि र्म मा र्द द्वा वि दि त्वा यून व यि य द्वा व नी
 द वी म् या व ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ इ ॥ ३४ ॥ इ ॥ ३५ ॥ कं का यी ॥ ३६ ॥ स वि म वि र्म य थ ग र्म र्म श्वा भ व वि य ग म व सा ना र वि य नि क थ

मेधात्मकः मिलाक विख्यातस्तु कीर्णमस्माकं स्तुतिभ्यामपि यदानां सवत्समिनीय इलागमनं कुरुष्व इष्य
 सहं वनाजानं सयोत्रजानयदमिष्टनडीविकनाकादयस्तु हितवसेनी यत्रीरायितस्तुतिभ्यामपि वत्स्यपुत्रासन
 ऊतनसर्वोयसर्गस्तुताः नयस्तुर्वविद्यालियात्युक्त एमायनयुक्तमर्गचर्चमि ॥ नयं मूकवाधिसन्तुष्टि वका ला ४३
 रिलघितमना यथयत्रियुर्विंशतवक्षान्मदुत्यापीत्यासमाययमावदुदयादुष्य सहं वाजनि सयोत्रासात्यजानयद
 ॥ त्ययसर्गस्तु ४४ समस्तनगीयकारुत्थमिष्टनयामास ॥ मूहाधन्या ५५ साधयत्रियुक्ताय नयं वकायन कज

नात्यर्थविस्तृता विस्तमायन ॥ मत्रीयाः ध्यायि यावत्सुत्वाधीनवस्मिं कर्मा यनवसगद्दसी इक्षंदयमदंखलुहि
 वामां सवाधिरं वा सदावामसिर्ध्वं वा सकलं सववा मत्रीयं स्वयमवा कृत्वा कृत्यन कस्तुत्यार्थदद्यां पागवम
 हाऊन कायत्ययनमकृत् गगनस्याथ भिनामपि मायकमित्यपि यज्जिविर्गममिष्टवत्तं वस्त्रीयं वयुर्गुर्वं सतीर्थस
 रुलं हृद्यकविष्ठा निधियाददं ॥ मद्रायसर्गस्तु ४५ कुरुवाजं सवाधवमपि यदानं न कविष्ठा स्वस्तुमानसं ऊनगा
 कुरुजस्यगीयद् ४६ वसमन्तिती मलित्रत्ययदानं न कविष्ठा विगन कवा ॥ कावून्यादुलरं ऊनरं सदास्यामिस्तु

वंमधिचन्द्रदिङ्गलाहंवाधिवत्तारिकाकथयामि॥चवंवाधिसत्त्वानविधीयवाधिसत्त्वत्वात्वात्तन्ममाह्वस
 यन्वावमहावाक्कामयय्याकयवराजस्यविवकालाशिलधिरमनावर्थमिषामधिवत्तयदाननवविष
 वयिष्याम्यद्यज्ञयाकसागर्मसहसंकविष्यामि॥अद्याहमसावात्कायात्सारंगदीर्घमिअद्यसत्त्वानांसहायसः
 गायसहसनीमानीकविष्यामि॥अद्यमहाकरुणाविवद्वयिष्यामिअद्यसर्वसंययिष्यामितीलाकयकाधयिष्या
 मिअद्यवाधिसत्त्वहादंसहलीकविष्यामिअद्यमावदोर्मनस्यग्रादयिष्यामिअद्यवार्यययास्यामिसत्यमिहस

विषयक॥अद्यवाधिसमीयसूयकाधयिष्यामिसर्वममाधिवत्तान्वमीवाधिसरुगम्यसहसरा॥अममनऊगः
 कृत्स्नकथयिष्यामि॥४रिवर्मंधात्रात्मसावयाकालनवीवादवभावतानमिवात्मनगर्वकर्मयाययिष्यामिसत्त्वः
 वंअद्याहंमावयिष्यामिदवगन्धर्वमानयान्नाककामान्तलप्रस्ययदानादमिकृकवाक्॥नवाहंकीदृष्टवार्कस
 वदाकीवर्वकनेनन्दयिष्यामिवत्तनसहस्र्याऊनरुविहमअद्यवाधिगर्मविकवद्वयिष्यामिसावद४विस्मा
 ययन्मगन्धर्वान्नूकानसूत्रान्नान्सत्त्वहमी॥४सकंदहंसस्यक्रामिकदात्वहं॥नियन्याथिनैयूवयूवयिष्या

43

मीति॥ गगनतलवानका निष्कवक्त्रा लोका यमखा निदवगा हा नदं मेमा निवाधिसत्त्वस्य गदगिद्र्यक वम निवा मः
दृषधमसकमत्यद्रुगमतिथोडकर्मडूकामानि संनिपकिता निवाधिसत्त्वा यिमखा वा क्रत्वादरू वा विधात्राया गशि
त्वा कथयति॥ गतदियर्यमदावा क्रना ४४ धृगार्यममि निवा मलि रूतु मत्तं यावदनुष विष्ट ४ सखल्यसु मया नस
कव ४ कया लं यलिया शास्त्रद रू नरुव द्या दारुं गद रू नममया त्व ४ रू दार्य कल्य यिष्टं॥ सिष्टं मम मित्र ४ कया लं या द्य
नगन्म सि रत्नस्य भव गदी रु मित्युक्ता वाधिसत्त्व ४॥ सर्वसत्त्वानू ग र्ग मं व विरु मूय रू या मरु मि द्वि मा न रू या म

स्य भाधिवरविद्यदधिविद्वद्वर्गमिन्नवयथिवीचदक्षमयामदसुभसत्वाधनीवयथिविद्यागः ४ रुगः ॥ पूर्वम
 स्माददमर्ववादाभिमाभवत्तयाचनकस्याकनार्यकावीभनरुनासम्पाकंभाधिद्वंयवस्मायय॥ नवमक
 सादवमावाधिसत्वस्यमहादिकर्ताविदित्वावाधिसत्वस्यासिक्तमहा नयसादमस्यायसूयुमवस्मिना ॥
 नमावाधिसत्वस्मान्वाक्यभानिं ४ नवाव॥ मनाद्वरुव नृणा गऊ गभी चमित्र ४ कपालं घाटयित्वा मसित्रतगृही
 तमि ॥ नवमकवाक्यभानिच बह्वदयावाधिसत्वस्यमित्र ४ कपालं सीद्धे ४ घाटयितुमावद्या ४ नमा सोमदात्सा

४८

महे

गीष्टे ४ ममेव विद्वन्मानाभिः सिगीववदनायादगः ४ कामवे वाग्मन्त्यविहीन ४ यविहीनोपिचगीवीवदनामधि
 वास्यदन्तयदन्तमादाय नवीवाक्यभानौमक्तिकमेषविहमयस्मायध्वेयवलत्यमदिगसूयुमवस्मिना ४ ॥ नववा
 क्यभानोदधिरुवाधिसत्वस्यगीष्टे ४ ममे ४ वायालो ४ ॥ मित्र ४ घाटयंति नस्यागस्माद्वि ४ नम ४ नम ४ घाटमानस्य
 समक्तादधिरंयद्यविहमावद्य ॥ अथगगनलसूदवनासूक्तकववलाकेमिद्ये बह्वदयेकथविद्वन्माननगीवः
 दृष्ट्वाहंवाधिसत्वद्वस्तककुदिमावद्या ४ नमंवाधिसत्वसिक्तय ४ दृष्ट्वायादगः ४ मलकयमिमममावद्वेयसंयः

नमो वीर्यममदिगच्छदमवयममसकर्मदृष्टमृत्युनपागवनवकापयन्नानोसत्त्वानांकारवाक्षममिषोतिरि
 र्भूतकयावगनाति ४ पात्यमानांतीमिगिविदित्वा नमो ग्राह्या रित्वा इतनादस्वडी विमयत्रित्यागममृच्छिमनकृष्ण
 ननानुलुवा सम्यक् भ्राधिमरिसे वक्ष्य नर्वधित्वा दृष्टव्य ४ सत्यान्यविमीचययमित्यवैसिंदनादंनदित्वा नायवदः
 नात्या दर्मस्वदयंस्वययनयाव चिर्वत्तयाय दृष्टया रिवांकि मंकदातल्लुग्धं सर्वसात्त्विकमद्रुशि ४॥ हिमंयु क्य
 मिहदहिनीसदं त्यं वक्रमा ४ खलुवाधिमरुमी ॥ अयं सकाल ४ समयस्ति गाद्यममाभमयी वत्तचित्तय प्रित्यज्जना

४५

वथजावदिदायिमा विगीकयामि संपूर्णरुलं सदलेरं ॥ अयि पु शा हृदया कृत्स्नं गमय प्रिणा गुमययनस्यैव कर्मयुक्त
 लो कर्मनात्मकं कर्तुं तद्वेयमरुममं त्यवं वाधिसत्त्व ४ स्वचिह्नं संप्रदाय्यूनवात्मगममवाव श्रद्धा दृष्टव्य महातीव्रमः
 माप्रवाभिनां याभिनां नदस्सह ४ हंसर्वसत्त्वानामथेनकनवसर्वदृष्टव्य द्वापमाकमिदकसत्त्वो शयिदृष्टव्य रोगीक
 यादित्यकर्मणव रिक्कवाधिसत्त्वस्यगा ४ पत्रमनीयवदना सहसेवा विरुक्तिता ४॥ यथायथा वा ४ यत्रममिदया वाधि
 सत्त्वस्यसमी ४ ४ ४ ४ यत्रांति ॥ कथा वाधिसत्त्वस्यया मंकि कद्र ४ यसाहस्य यवाहस्यय प्रिवा ववत्याय प्रिवाकी मे ४

हे

मंथ

५२

श्री कर्मां वदयामास ॥ न तस्मात्वाक्यं सदातिना सदा र्षेण सदा कर्तव्यं कर्म दद्यात्तत्र विमयभूयगता ॥ अन्यानीम
 स्वाभिनिनी जमा ४ यत्र सायमव ४ ॥ रु व न ४ पूर्वमस्मा शि ४ ॥ र्गं यथा क्रियार्थं महात्मात्मात्मा न्यायि कययायत्र न कला
 दयात्यविकस्यमानः ॥ ति ४ दानी नु यथा ४ ॥ तात्सहसगुणयवित्याग ४ कर्मात्मा शिवस्य दत्तं सत्यत्मा नयत्र सायाधि
 सत्यस्य भिव ४ कया संयविद्यार्थं महात्मा त्रिषु पादना वसिष्ठमानसवी वासुदेवमस्ति कथि धुर्लक्षिनामसि मूढं
 सायया ४ याधिसत्त्वायि गीमत्रमवावृत्तं मत्र सान्नि कीं वदनीं लोपति सख्या नवनना विवायवा ४ मत्र ४ समावध्यह

५०

२४

शुभमवस्ति ४ न तस्मै यमपूत्रये विवातिनिर्गृह्ये ४ ॥ याधिसत्त्वस्य सदसेव मित्रासक्षिगमनिवर्त्तं सदा वलनम
 लं समस्तं न तमसिष्कमदुर्गं ॥ अथ याधिसत्त्व ४ रुडीवितं निवय रुस्मां यत्रमदा वृत्तं वदनामगक्षित्वा स संयम
 स्मान्पूयानूवाच न हि ययं रुडमखावददं पाक्षान्नवलित्यका मिना वदवधीर्धं मनममि वत्तं ममया नितलस्य नि
 क्षययतयददं स्वहसूनयमियादयं धिर्लं यसादयीष्यामि ४ नितनस्तेस्यया ४ ॥ नत्समि लत्तं मया मयददं यन्त्रवा
 ययमिष्ठयिता ॥ ॥ अथ याधिसत्त्व ४ यमदिनरुदयसहस्राभसम ४ संवृत् ४ यत्रिपू ४ धुमममनायथ ४ निति विदि

लोकायामभिवर्त्तमानावायामनसादरुमिमिदानीं सुखदसुखदामियथायमयायं स्वस्तिनामभिवर्त्तमाना
 सम्यक् भवति शिवायथासा नन संसृष्टिददगा इका इतनसत्यनसत्यवाकना इयं महाभविदृष्टसदस्यवाह ४ सप्रीवक
 नपदस्यान्यवीयसत्यानां सर्वेषां सत्यपि इव वीर्यं दृष्टिं शिवायमनसमर्थस्यान्मववाविताशयत्यत्का सर्वसत्यानां भेदास्म
 यित्ता गत्यावाक्य (सत्यामहाकापसादवतानगतमनिवर्त्तनसुखदद वान ॥ पतिवादिह्यव शिवायमनसमर्थस्यान्मववाविताशयत्यत्का सर्वसत्यानां भेदास्म
 धिसेत्तसर्वसत्यमेषां विरुपस्वयानूकवासम्यक् भवति लल्लमानूस्मर्वकगस्य वीविस्मयमूपनयनसुखं लंघ्यमंमन्यमा

३१

न ४ पमदिनददय ४ पथागं पतिपमस्यमरुत्तुस्त्रीमवस्तिन ४ यनियसस्यमाणवययागमूर्च्छिग ४ ॥ सहसेवधवनीकयनियतिः
 क ४ ॥ गववाक्य ४ ॥ आधुमपदनिवासिनादवगयावाधिसत्वस्यसनाप्रथयनिय ४ ॥ वर्थकस्मिन्नवर्त्तमानादृष्टसदस्यवाः
 क ४ ॥ पूर्वस्मादवस्मापिना ४ ॥ भिद्वत्तलिनमववाधिसत्वस्यमभेदस्यसदस्यवाह ४ ॥ विपत्यपिना ४ ॥ सववस्माकाविस्मल्लभनिः
 वदिश ४ ॥ ॥ ककुत्तादृष्टसहावाकागवमभिवर्त्तनदृष्टाविस्मयमयगकावाधिसत्वस्यैकीकृतनावाव ४ ॥ वीयनिसागः
 यविस्मयिना वेषाविकाकिसेयस्यमनविचिकयन् वाधिसत्वस्यैकीकृतमहानपसा मत्यादया मास ॥ गतासौ वाधिसत्वस्यवि

नि

२ ना

報

॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

सु. २५वाद्यानि

१

दत्तात्रेयसन्तत्यापलिङ्गादिद्यान्यस्तानि क्रियन्ति यद्वा नित्यं कर्मदानि प्रधुलीकानि जगत्त्रयं निरवदन्तवर्धन्ति दि
द्यानिर्मादादाववा निपुणानि क्रियन्ति दिद्यानिर्माद्यत्रादयन्ति येन त्रयाश्च काय ४॥ गै ४॥ कादद्यामादेवायमहात्मर
स्माननाथस्तुतिविवेदनायाह ग ४॥ महमेवयाधनयनित्यत्र निमित्तिविदित्वा च मित्तवित्तवाधिसन्तुष्टा वीर्यसधा
वत्तारि ४॥ सङ्गीयन्तीरिवाधिरिनापूत्रयासास त्वेदनां वय ४॥ मिथान ॥ ॥ अन्तात्वेवमात्री वीर्यसधाधिरिमान्
वयूयातिवयदात्र धानिनिमित्तानि दत्तासं वक्तव्यं किं सार्थमनान्य यथास्मानि मित्तानि यादृशतानीति सस्मै सत्यकः



三万

五

पञ्चम्यादवगयाविल्लयभावाविता॥ अथमावित्रिविधिविदमैर्वश्यं प्रमथममिदृक्कयवाधिसत्त्वस्य कर्मभूत्वासंः
द्वयमामकृयस्यत्वावाहार्यमदान्मिदृक्कयविकारः॥ इयवित्रिदायसाध्यावाधिसत्त्वकाममृषसंकम्यपसमाद्यवेनम
काकमिदं॥ एषवद्वलाकारवत्तममदवदेवगयाविल्लयभावाविता॥ सप्तत्यायर्वाविस्मयमृषमगठसपयितावडयवित्रिदा
यसाध्यामाकंरनमत्वायसावत्यादयायध्याकृतस्यवेनाह्वयमर्थनिवद्वयव्यावर्गिदवीयव्यावर्गिदवीयव्याकृत्यवयकाः
नमो नमः॥ यामाह्वयवत्तागनेगमकृत्यं गृहीत्या गमज्ज्वलविदायसाध्यावाधिसत्त्वकाकर्ममृषसंकम्यपसमाद्य

यै

मन्त्रादिप्रतीतिगुणयलास्वयमयमूहीववत्यादूर्ध्वं॥ अथ नयवयदि काय ४ पृथिवी कंथाजान ४॥ सा मयैवावा उमावदादि
 ४४ पभन्ना ४ सरला ४ सूर्यो वरुममो लास्यनययनविवायाडिना॥ आकाहादवद्वन्द्वरुथादुहितदकिगगधमलनगमेवदः
 वेदकुनदधका विमयात्कृत्वावनेहोहाकममकवीर्जवदवाकन ४ कवित्पूयालिप्रियंनिकविवमुलिकविदासावध
 रंलिकविदेविधानिवाद्यानिमयवादयंनि॥ आकासावदिव्यापूयंमिमिर्नवलवर्षयननिर्मसवीर्जजाम्बदीषावलेजानः
 साधुलोभनसंज्ञादिन ४॥ गांरदिगामविष्ठावीरुमिद्वद्वादवासयय ४ सर्वजनकाय ४॥ आभ्यर्थकातामूरुनकाताउदान

५६

मूदानपीति॥ आभ्यर्थमहायन्त्रानामादासल्याः॥ अथमाविचित्रपिथयोवा ४॥ गांवीवंवाधिसर्वदस्ताविमयात्कृत्वा
 लावन ४ कर्माकालिस्वरुवाववा॥ साधुसाधुमदसुनिधितानवृद्धिचकंयमयलिधिवनगनामसत्यमदाकवृत्तयश
 नामत्वमवसुनासकवधुधर्मसुसावदानविदवमननयवसायनानरुवांसम्यक्वाधिसहितसंलात्पमः॥ अथमावीवि
 सवि ४ पवमनयविवायाववहति ४ विवि ४ सयविवाव ४ मकवक्रादय ४ वदवा ४ वाधिसत्वमहितसंवाधपक्रान्ता ४॥ अथय
 यन्नायांकांरुवायाकासुवविवावावाधिसत्वस्यापादयानियत्यमा ४॥ दूर्दिनवदन ४ कर्माकालिपूठावाधिसत्वमवृत्तवतविः

सययासासापसीददवमास्मानसाधंसीद॥काहीनूपरिह्याऊसुदागकदवसाकर्मनगरंयूनवपिनाईकावयान्ता
थावयामिदेवसुवेनिधनंगमाळूमि॥नमायाधिसुखनकावृक्षदधिसासितवान्॥पूजाकववत्ताव॥प्रत्येकवृक्षावाधिस
त्वमयसंकम्येवमाह॥साधसाधूमदावाऊ॥रुयंनंगकनयन्ताकर्मनगरंमनमधिसासितुं॥यदित्याद्यनाधिसासितम
रुविषयत्रियमंमयंकनकाय॥यद्वाहयंवाहामदमाजसर्व॥विषयनिवासिकूनकायउष्ट॥विहंइदयित्वानिवासि
रुम॥कालगमा॥रुविषयरुत्साधूसाकर्मनगरंगत्वाधर्मवशाईयालयएत्कोप्रयत्यकवृक्षावाधिसत्यंयपिवारंकर

下

३।

नवमदायविदिदायमासाकर्मनगर्वसयाथयकान्ता॥वाधिमत्यापिपद्यालंयधयाह्लासपविवायधमरुतामस्कायन
मिंदामनयमिद्यायवाक्कारिषकधारिषिक॥अथयवृहंकावाह्लाद्व्यसहनंछत्वायूनःसत्यवताननूयध्वजुयंगः
वलकाथनवाधिमर्त्यपयूनमापादयानिवत्यक्रमयित्वावकथयनि।त्वंभवयाकारुहकवानयाधिकदूभि।नगाया
धिमत्यनद्व्यसहवाक्कारिषवायावदाफमहावत्सेसंगयस्वविमयमयविमर्दिन॥नृवंसंर्वकृन्ध्रंक्षीपंनिंवा
सिगेनैकंनैकायंयावदोफंरिनेब्धंस्तेक्ष्णंनर्तंनर्थदंक्षंक्षेत्रंषंकर्मपथंष्यनिस्त्रायिमा॥

नवसर्वपाणि सिसमाना जाभा जावदायं महादेव नृपद ४५ कुरु सलव कर्मपथ ५५ पुनिरुपायिता ४॥ यावदनुपूर्वेन
वाधिसलव ४५ कलं कंदे द्विप या जासं देव ४॥ न न सर्वे कुरु दीपनिवाहि नं ऊन कायं यावदायं हि न स व लून स नं य
द ४५ कुरु कर्मपथ ५५ पुनिरुपायिता ४॥ यावदनुपूर्वेन ४५ कुरु सलव कर्मपथ ५५ पुनिरुपायिता ४॥ यावदनुपूर्वेन ४५
सदायुषा कुरु ४॥ देव कालेन कालं स मय क वा त्रिधायामपय कृता तीवरा स्य संपादितं व तिकनख लून स मय नास्ति न
ऊन द्विपय ४५ कठिनेन नृपद ४५ कालं क वा त्रिधायामपय कृता तीवरा स्य संपादितं व तिकनख लून स मय नास्ति न

५८

काला कुरु वाधिसलव ४५ सर्वे कुरु दीपनिवाहि नं ऊन कायं कुरु सलव पात्राय नं हत्वा सर्वपक न वि ४५ ४५ संपादितं द स स कर्मपथ ५५
पुनिरुपायिता ४॥ न न सर्वे कुरु दीपनिवाहि नं ऊन कायं कुरु सलव पात्राय नं हत्वा सर्वपक न वि ४५ ४५ संपादितं द स स कर्मपथ ५५
त्याकाय पुका मरुदं प्रहाय न द ह्नु स विदानी व म्ना क स ल गत या वा व य ना महाव द्का संपादितं ४॥ न गवां न ह ॥ किमन्य ५५ ५५ ५५
रि कृता या सो म नि वृत्ता नाम महाजा ५५ स व न न स मय न वाधिसलव यया या व ह्नु ना नाम या क हि क व ४॥ नि व सि जा न व त्व सः
की प्रित य वि त्या ए न स त्या ना मर्थ य वि त्या क ॥ या र्थ या सो व द्वा व गी द वी ग न कौ काले न स मय न व या वा सो य ५५ ५५ ५५ ५५

रना

म
रकायननेन

नेन

नकावनसमयनयः सोपद्राह २४ कमावायववाजा श्रुदपवलाहलाहि। कृशागनकालनममयनया सोर्वक्रनथ
 नामवाक्रदपूयादिनाहन् ॥ चषनवः विप्रकारि कृ० ॥ गनकालनगनसमयनयः सोर्वक्रविमंघीमदविप्रस्थनमम
 लाग्धा। (थेपद्रावमिदवीदह) ॥ चषेवासवानै दार्कैरि० ॥ गनकालनगनसमयनया सोमावीचिनाममदविप्रस्थनममम
 निकाल्पद्रावमिदवीयद्राह २४ कमावः वगृहीत चषावा सोमदा मायादवी ॥ गनकालनगनसमयनया सोमावीरुनद
 चीनामनव चवा सोमद्रायायमाहिरुसंनकालनगनसमयनयः सोमाविलोयहृ० ॥ त्समसिजा वाक्रसवृधवीमम

ऊर

२७

देवडा

थे

मानिकान्मासविप्रयावनकारदयनवनागिवानामहिरु० ॥ गनकालनगनसमयननगममिक्कृत्वा विमलः
 ह्यामात्याहवन् ॥ चगान्यवतानिरुद्धोऽहं कवाङ्गपमखा निर्यवः ॥ कृशागानि गनकालनगनसमयनया सोवाजा
 यमदानाममाहदयनवा सोदवदह सनकालनकालनगनसमयनयनगवलावावा क्रधाहवन् यमसिवाजा कंमः
 सिवत्वमत्याहगृहीत। चवनववलावा इतिवृद्ध ॥ सूरति ४० ॥ कात्यायनाममानिकारि कृवः ॥ गनकालनगनसमय
 ननवदिरि कृवावा विमलरुगनया विमलराय विप्रवत्तार्थमहदूकवैकं नमिनि ॥ ॥ हिरुवः ४० ॥ यजागा ४० ॥ सवर्षं

वस्त्रादिभिरुत्तमानि संजातानि ॥ कस्याप्यस्य पूजया जाधमि का धर्म लया चंका यया मास ॥ नन नरे त्यपति संस्कृत
 कथा गम रुक्षानुसृत्य स्ववज्रमक्षिमत्या दत्तक सिंस्त्र पट्टुं जाया पिच्छ जाव वाय धं कर्तुं कृपया का रि ॥ सर्व पूजा रि ध
 पूजना ना वाद्या निषवा दिना नि ॥ मृग न्धन न पुदीप मा ला ॥ ४५ ॥ लिता ॥ रुता ॥ ४६ ॥ यद्य य म म य ॥ ४७ ॥ यदी य ॥ ४८ ॥ शिव सा धा रि न
 ४९ ॥ यदी य ॥ ५० ॥ पूजा कृता य धि धन नै ॥ ५१ ॥ यदी य वि धा नी गु धा नी ला रि त्या द्य न स र्व ला का धर्म ल वि व का ल य र्ध न र्म य य यो म
 मि या सो रि कृ वा वा जा रु धा नु रि व ॥ ५२ ॥ म म क र्त्तुं द्र स्य पा य नि य क स्य स्य क वा ॥ ५३ ॥ रुता ॥ ५४ ॥ न व न व स वा जा म लि कृ ॥ ५५ ॥ य रु

२६

न शि रि व न ॥ ५६ ॥ म म क र्त्तुं द्र स्य स्य नि म र्त्तुं ॥ ५७ ॥ क स्य क र्त्तुं ॥ ५८ ॥ वि पा क र्त्तुं स र्व ला का ना ना य का वा जा य व म ध र्म मा ॥ ५९ ॥ य द द द
 रु व मि म ॥ ६० ॥ य रु ता न न क र्त्तुं न न क र्त्तुं वा व वा य धं क र्त्तुं ॥ ६१ ॥ न ना स्य ऊ न म नि दि यी क र्त्तुं व र्त्तुं व ल द धु म लि वा ल यी ऊ न म य र्त्तुं न नीः
 क र्त्तुं व मा रि धा रि नै ॥ ६२ ॥ य रु न ध क र्त्तुं य का का रि ॥ ६३ ॥ पू जा क र्त्तुं न ना स्य ऊ न नि दि यी ध क र्त्तुं य का का रि ॥ ६४ ॥ म म क र्त्तुं य का ॥ ६५ ॥ य रुः
 ना व र्त्तुं म नि वा वा पि न र्त्तुं ना स्य म ह न्य स्य व म न क र्त्तुं ॥ ६६ ॥ य र्त्तुं म नि व र्त्तुं सि डा र्त्तुं ॥ ६७ ॥ पू न व य रि कृ वा वा रु म लि कृ ॥ ६८ ॥ न
 ॥ ६९ ॥ मा र्थ वा रु क र्त्तुं न नि वा य स्य स्य य स्य क र्त्तुं द्र स्य वि य य म म नी रि वा ध धा रि य लि य वि वा य म म ॥ ७० ॥ म य र्त्तुं क र्त्तुं द्र स्य

३

[illegible]

ममस्वात्मगः कथं वीर्यशः॥ ॥ॐ हार्वन्तु क्रवन्ति न गच्छामि दमया वह्निना तल्लभनमुत्तरितवारुणतमासा विममह्यन
दनीभिः॥ ॥ॐ मिथीमविद्यो जयदानसमापः॥ ॥ॐ॥

ASMA ARCHIVES

216	STANLEY HALL
-----	--------------

53